Tatva charcha
Ek Shuruvaat

वीरशासन-जयन्ती पूजन

रचयिता - श्री राजमलजी पवैया

प्रस्तुति - तत्वचर्चा

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

(ताटंक)

वर्धमान अतिवीर वीर प्रभु सन्मति महावीर स्वामी
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर अन्तिम तीर्थंकर नामी ॥

श्री अरिहंतदेव मंगलमय स्व-पर प्रकाशक गुणधामी
सकल लोक के ज्ञाता-दृष्टा महापूज्य अन्तर्यामी ॥

महावीर शासन का पहला दिन श्रावण कृष्णा एकम
शासन वीर जयन्ती आती है प्रतिवर्ष सुपावनतम ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

विपुलाचल पर्वत पर प्रभु के समवशरण में मंगलकार
खिरी दिव्यध्वनि शासन-वीर जयन्ती-पर्व हुआ साकार ॥

प्रभु चरणाम्बुज पूजन करने का आया उर में शुभ भाव
सम्यग्ज्ञान प्रकाश मुझे दो, राग-द्वेष का करूँ अभाव ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मति वीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं
ॐ ह्रीं श्री सन्मति वीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं
ॐ ह्रीं श्री सन्मति वीरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधि करणं

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

भाग्यहीन नर रत्न स्वर्ण को जैसे प्राप्त नहीं करता
ध्यानहीन मुनि निज आतम का त्यों अनुभवन नहीं करता ॥
शासन वीर जयन्ती पर जल चढ़ा वीर का ध्यान करूँ
खिरी दिव्यध्वनि प्रथम देशना सुन अपना कल्याण करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

विविध कल्पना उठती मन में, वे विकल्प कहलाते हैं
बाह्य पदार्थों में ममत्व मन के संकल्प रुलाते हैं ॥
शासन वीर जयन्ती पर चंदन अर्पित कर ध्यान करूँ
खिरी दिव्यध्वनि प्रथम देशना सुन अपना कल्याण करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

अंतरंग बहिरंग परिग्रह त्यागूँ मैं निर्ग्रन्थ बनूँ
जीवन मरण, मित्र अरि सुख दुख लाभ हानि में साम्य बनूँ ॥
शासन वीर जयन्ती पर, कर अक्षत भेंट स्वध्यान करूँ
खिरी दिव्यध्वनि प्रथम देशना सुन अपना कल्याण करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

/Tatvacharcha GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

शुद्ध सिद्ध ज्ञानादि गुणों से मैं समृद्ध हूँ देह प्रमाण
नित्य असंख्यप्रदेशी निर्मल हूँ अमूर्तिक महिमावान ॥
शासन वीर जयन्ती पर, कर भेंट पुष्प निज ध्यान करूँ
खिरी दिव्यध्वनि प्रथम देशना सुन अपना कल्याण करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

परम तेज हूँ परम ज्ञान हूँ परम पूर्ण हूँ ब्रह्म स्वरूप
निरालम्ब हूँ निर्विकार हूँ निश्चय से मैं परम अनूप ॥
शासन वीर जयन्ती पर नैवेद्य चढ़ा निज ध्यान करूँ
खिरी दिव्यध्वनि प्रथम देशना सुन अपना कल्याण करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

स्व-पर प्रकाशक केवलज्ञानमयी, निजमूर्ति अमूर्ति महान
चिदानन्द टंकोत्कीर्ण हूँ ज्ञान-ज्ञेय-ज्ञाता भगवान ॥
शासन वीर जयन्ती पर मैं दीप चढ़ा निज ध्यान करूँ
खिरी दिव्यध्वनि प्रथम देशना सुन अपना कल्याण करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

(ताटंक)

द्रव्यकर्म ज्ञानावरणादिक देहादिक नोकर्म विहीन
भाव कर्म रागादिक से मैं पृथक् आत्मा ज्ञान प्रवीण ॥
शासन वीर जयन्ती पर मैं धूप चढ़ा निज ध्यान करूँ
खिरी दिव्यध्वनि प्रथम देशना सुन अपना कल्याण करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

कर्मल रहित शुद्ध ज्ञानमय, परममोक्ष है मेरा धाम
भेदज्ञान की महाशक्ति से पाऊँगा अनन्त विश्राम ॥
शासन वीर जयन्ती पर मैं सुफल चढ़ा निज ध्यान करूँ
खिरी दिव्यध्वनि प्रथम देशना सुन अपना कल्याण करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

मात्र वासनाजन्य कल्पना है परद्रव्यों में सुखबुद्धि
इन्द्रियजन्य सुखों के पीछे पाई किंचित् नहीं विशुद्धि ॥
शासन वीर जयन्ती पर मैं अर्घ्य चढ़ा निज ध्यान करूँ
खिरी दिव्यध्वनि प्रथम देशना सुन अपना कल्याण करूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मतिवीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जयमाला

(दोहा)

विपुलाचल के गगन को, वन्दूँ बारम्बार
सन्मति प्रभु की दिव्यध्वनि, जहाँ हुई साकार

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

महावीर प्रभु दीक्षा लेकर मौन हुए तप संयम धार
परिषह उपसर्गों को जय कर देश-देश में किया विहार ॥

द्वादश वर्ष तपस्या करके ऋजुकूला सरितट आये
क्षपकश्रेणी चढ़ शुक्ल ध्यान से कर्म घातिया विनसाये ॥

(ताटंक)

स्व-पर प्रकाशक परम ज्योतिमय प्रभु को केवलज्ञान हुआ
इन्द्रादिक को समवशरण रच मन में हर्ष महान हुआ ॥

बारह सभा जुड़ीं अति सुन्दर, सबके मन का कमल खिला
जनमानस को प्रभु की दिव्यध्वनि का, किन्तु न लाभ मिला ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

(ताटंक)

छ्यासठ दिन तक रहे, मौन प्रभु दिव्यध्वनि का मिला न योग
अपने आप स्वयं मिलता है, निमित्त-नैमित्तिक संयोग ॥

राजगृही के विपुलाचल पर प्रभु का समवशरण आया
अवधिज्ञान से जान इन्द्र ने गणधर का अभाव पाया ॥

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

बड़ी युक्ति से इन्द्रभूति गौतम ब्राह्मण को वह लाया
गौतम ने दीक्षा लेते ही ऋषि गणधर का पद पाया ॥

तत्क्षण खिरी दिव्यध्वनि प्रभु की द्वादशांगमय कल्याणी
रच डाली अन्तरर्मुहूर्त में, गौतम ने श्री जिनवाणी ॥

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

सात शतक लघु और महाभाषा अष्टादश विविध प्रकार
सब जीवों ने सुनी दिव्यध्वनि अपने उपादान अनुसार ॥

विपुलाचल पर समवशरण का हुआ आज के दिन विस्तार
प्रभु की पावन वाणी सुनकर गूँजा नभ में जय-जयकार ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

(ताटंक)

जन-जन में नव जागृति जागी मिटा जगत का हाहाकार
जियो और जीने दो का जीवन संदेश हुआ साकार ॥

धर्म अहिंसा सत्य और अस्तेय मनुज जीवन का सार
ब्रह्मचर्य अपरिग्रह से ही होगा जीव मात्र से प्यार ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

घृणा पाप से करो सदा ही किन्तु नहीं पापी से द्वेष
जीव मात्र को निज-सम समझो यही वीर का था उपदेश ॥

इन्द्रभूति गौतम ने गणधर बनकर गूँथी जिनवाणी
इसके द्वारा परमात्मा बन सकता कोई भी प्राणी ॥

(ताटंक)

मेघ गर्जना करती श्री जिनवाणी का वह चला प्रवाह
पाप ताप संताप नष्ट हो गये मोक्ष की जागी चाह ॥

प्रथमं, करणं, चरणं, द्रव्यं ये अनुयोग बताये चार
निश्चय नय सत्यार्थ बताया, असत्यार्थ सारा व्यवहार ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

तीन लोक षट् द्रव्यमयी है सात तत्त्व की श्रद्धा सार
नव पदार्थ छह लेश्या जानो, पंच महाव्रत उत्तम धार ॥

समिति गुप्ति चारित्र पालकर तप संयम धारो अविकार
परम शुद्ध निज आत्मतत्त्व, आश्रय से हो जाओ भव पार ॥

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

उस वाणी को मेरा वंदन उसकी महिमा अपरम्पार
सदा वीर शासन की पावन, परम जयन्ती जय-जयकार ॥

वर्धमान अतिवीर वीर की पूजन का है हर्ष अपार
काललब्धि प्रभु मेरी आई, शेष रहा थोड़ा संसार ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सन्मतिवीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(दोहा)

दिव्यध्वनि प्रभु वीर की देती सौख्य अपार
आत्मज्ञान की शक्ति से, खुले मोक्ष का द्वार ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha